रोम में प्रेरित पौलुस

सब्त अपराह्न सितम्बर 30

इस सप्ताह के पाठ के लिए पढ़ें : रोमि० 15:20-27, प्रेरित 28: 17-31, फिलि० 1:12, रोमि० 1:7, इफि० 1, रोमि० 15:14

याद वचन: *"पहले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत् में हो रही है"* (रोमियों 1:8)

रोमियों की किताब के छात्र के लिये किताब की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना महत्त्वपूर्ण है। संदर्भ हमेशा निर्णायक होता है जब परमेश्वर के वचन को समझने की चाह होती है। विषय-वस्तुएँ जिनका उल्लेख किया जा चुका था हमें जानने और समझने की जरूरत है। पौलुस एक खास दल के मसीहियों को एक खास समय पर खास कारण के लिये लिख रहा था; उस कारण को जानते हुए जहाँ तक संभव हो हमारे अध्ययन में बड़ा मददगार होगा।

चलिये, हम स्वयं को प्रथम सदी के रोम की ओर ले चलें और वहाँ सभा का सदस्य बनें और तब प्रथम सदी के चर्च सदस्यों की तरह हम पौलुस और वचनों को सुनें जिसे पवित्रात्मा ने रोम के विश्वासियों को सुनाने के लिये उसे दिया ।

यद्यपि, तात्कालिक विषय जिन्हें पौलुस संबोधित कर रहा था स्थानीय थे, पर इसके पीछे का सिद्धान्तिक सवाल कि एक व्यक्ति कैसे बचाया जाता है - विश्वव्यापी है। जी हाँ , पौलुस खास दल के लोगों से बातें कर रहा था; और हाँ, जब उसने पत्री लिखी उसके मन में एक खास विषय था । परन्तु जैसे हम जानते हैं, सदियों बाद पूरी तरह से भिन्न समय और संदर्भ में वचन (शब्द) जिन्हें उसने लिखा, मार्टिन लूथर से वैसे ही प्रासंगिक थे जैसे वे पौलुस के साथ थे जब उसने पहली बार उन्हें लिखा, और आज वे वैसे ही हमारे साथ प्रासंगिक हैं।

रविवार अक्टूबर 1

प्रेरित पौलुस की पत्री

रोमियों 16:1-2 संकेत करता है कि पौलुस ने संभवत: रोमियों को किंख्रिया के ग्रीक शहर में लिखा, जो कुरिन्थ के समीप था । पौलुस की फोएब पर चर्चा, जो वृहत्तर कुरिन्थ का वासी था, उस स्थान को प्रमाणित करता है कि यह रोमियों को पत्री लिखने की अनुकूल पृष्ठभूमि थी।

नये नियम की पत्रियों के उद्‌गम शहर को स्थापित करने के उद्देश्यों में से एक लेखन की तारीख का पता लगाना है। क्योंकि पौलुस ने अनेक यात्राएँ की, एक खास समय में उसके स्थान को जानना, हमें तारीख को पता करने में मदद देगा।

पौलुस ने कुरिन्थ में कलीसिया की स्थापना, सन् 49-52 में अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा में की (देखें प्रेरित० 18:1-18)। अपनी तीसरी यात्रा, सन् 53-58 में उसने ग्रीस का पुन: भ्रमण किया (प्रेरित 20:2-3) और अपनी यात्रा के अन्त में उसने यरूशलेम में संतों के लिये दान प्राप्त किया (रोमि० 15:25-26)। अत: रोमियों की पत्री संभवत: सन् 58 के प्रारम्भिक महीनों में लिखी गई थी।

पौलुस ने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा में कौन-सी अन्य खास कलीसियाओं का भ्रमण किया? प्रेरित 18:23

गलातियों की कलीसियाओं के भ्रमण में पौलुस ने पाया कि उसकी अनुपस्थिति में झूठे शिक्षकों ने सदस्यों को विश्वास में लेकर खतना एवं मूसा की व्यवस्था की रस्मों को मानना सिखाया। इस भय से कि उसके विरोधी उसके पहुँचने से पहले रोम पहुँच जाएँ, पौलुस ने उसी त्रासदी को पहले ही रोकने के निमित्त, जो रोम में घटी एक पत्री लिखी। यह माना जाता है कि गलातियों के नाम पत्री भी पौलुस के तीन महीने रहने के दौरान कुरिन्थ से लिखी गई थी, और शायद उसके पहुँचने के तुरंत बाद, यह उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा थी।

"रोमियों को अपनी पत्री में, पौलुस सुसमाचार के महान् सिद्धान्तों को बताता है। उसने प्रश्नों में अपनी स्थिति की व्याख्या की और दिखाया कि आशा एवं प्रतिज्ञा जो एक समय विशेष रूप से यहूदियों के लिये थीं अब अन्य जातियों को भी प्रदान की गईं।" - *एलेन जी० ह्वाईट, द एक्टस् ऑफ अपोसल्स पेज 373* ।

जैसे कि हमने कहा, बाइबल की किसी भी किताब के अध्ययन में यह जानना महत्त्वपूर्ण है कि यह क्यों लिखा गया; यह किस परिस्थिति को संबोधित कर रहा था। इसलिये रोमियों की पत्री को समझना हमारे लिये महत्त्वपूर्ण है, यह जानने के लिये कि कौन-से प्रश्न यहूदी एवं अन्यजाति की कलीसियाओं को व्यथित किये जा रहे थे। अगले सप्ताह का पाठ इन प्रश्नों पर चर्चा करेगा।

किस प्रकार के विषय (मुद्दे) इस समय आपकी कलीसिया को व्यथित किये जा रहे हैं? क्या धमकियाँ अंदर से है या बाहर से? इन वाद-विवादों में आपकी क्या भूमिका रही है? कितनी बार आपने, जैसे भी संघर्षों को आप सामना कर रहे हैं, अपनी भूमिका, अपनी स्थिति और अपने नजरिए को प्रश्न करने से रोका है? इस प्रकार की स्व-परीक्षा क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण है?

सोमवार **अक्टूबर 2**

पौलुस की रोम भ्रमण की इच्छा

इसमें कोई प्रश्न नहीं कि व्यक्ति स्पर्श अधिकांश मामलों में संपर्क का बेहतरीन तरीका है। हम फोन, ई-मेल, शब्द संवाद, स्काईप कर सकते हैं, परन्तु आमने-सामने सशरीर संपर्क बेहतरीन तरीका है। यही कारण है पौलुस ने अपनी पत्री में रोमियों को सूचित किया कि उसका इरादा था कि स्वत: उन्हें देखे। वह चाहता था वे जानें वह आ रहा है, और क्यों?

पढ़ें रोमियों 15:20-27 रोम को पहले ही भ्रमण न कर पाने के, पौलुस कौन से तर्क पेश करता है? जब वह आया किस कारण उसने आने का निर्णय लिया। उसके तर्क में लक्ष्य उसके प्रति कितना केंद्रित था? लक्ष्य और यहाँ पर पौलुस के वचनों से गवाही के विषय में हम क्या सीख सकते हैं? रोमियों 15: 27 में यहूदियों और अन्यजातियों के विषय में पौलुस कौन-सा दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण तर्क पेश करता है?

अन्यजातियों के लिये महान् मिशनरी को नये क्षेत्रों में सुसंवाद ले जाने की हमेशा प्रेरणा मिलती रही, दूसरों को मेहनत करने के लिये उन्हीं जगहों पर छोड़ दिया जहाँ पर सुसमाचार स्थापित हो चुका था। उन दिनों में जब मसीहियत युवा थी और कामगार कम थे, पौलुस के लिये पहले ही प्रवेश हो चुके दोनों में काम करना बहुमूल्य मिशनरी ऊर्जा को नष्ट करना होता। उसने कहा, "पर मेरे मन की उमंग यह है, कि जहाँ-जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊँ ऐसा न हो, कि दूसरे की नींव पर घर बनाऊँ," ताकि "जिन्होंने नहीं सुना वे ही समझेंगे" (रोमि० 15:20-21)

पौलुस का उद्देश्य रोम में बस जाने का नहीं था। उसका लक्ष्य स्पेन में प्रचार

करना था। इस साहसिक कार्य के लिये वह रोम के मसीहियों से सहारा पाने की आशा करता था ।

मिशन (लक्ष्य) के संपूर्ण प्रश्न के बारे में, इस तथ्य से कि पौलुस स्थापित कलीसिया से मदद चाहता था ताकि नये क्षेत्र में प्रचार किया जाये, हम क्या महत्त्वपूर्ण सिद्धांत ले सकते हैं?

रोमियों 15:20-27 को पुन: पढ़ें। देखें पौलुस की महान् इच्छा सेवकाई एवं सहायता के लिये कितनी अधिक है। आपको एवं आपके कार्यों को क्या उत्प्रेरित करता है? सेवा का हृदय आप में कितना है?

मंगलवार **अक्टूबर 3**

रोम में पौलुस

"जब हम रोम में पहुँचे,तो पौलुस को एक सैनिक के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा मिल गई" (प्रेरित 28:16)

पौलुस का आखिरकार रोम आ जाने के विषय में यह अवतरण हमें क्या बतलाता है? अनापेक्षित एवं अनिच्छित चीजें हमारे रास्ते में अकसर आ जाते हैं इसके विषय में इससे हम क्या पाठ सीख सकते हैं?

जी हाँ, पौलुस अंतत: रोम पहुँच गया, जौभी कि यह एक कैदी के रूप में था। कितनी बार हमारी योजनाएँ हमारी उम्मीद और आशा के खिलाफ आती हैं, जबकि हम अच्छे इरादे से इसकी शुरुआत करते हैं।

पौलुस अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में गरीबों के लिये अपने दान के साथ यरूशलेम पहुँच गया, इन दानों को उसने यूरोप एवं एशिया माईनर की सभाओं में जमा किया था। परन्तु अनापेक्षित घटनाएँ उसका इन्तजार कर रही थीं। वह गिरफ्तार कर लिया गया और जंजीर से बाँधा गया। कैसारिया में दो वर्षों तक कैदी के रूप में रहने के बाद उसने कैसर को अपील की। कुछेक तीन वर्षों की उसकी गिरफ्तारी के बाद, वह रोम पहुँच गया, संभवत: उस रीति से नहीं जैसा उसने सोचा था जब उसने प्रथम बार वर्षों पूर्व रोमी कलीसिया को वहाँ की कलीसिया को भ्रमण करने की अपनी इच्छा के विषय में लिखा था ।

रोम में पौलुस के समय के विषय प्रेरितों 28:17-31 हमें क्या बतलाते हैं? अति महत्त्वपूर्ण, उनसे हम क्या सीख ले सकते हैं?

"पौलुस के उपदेशों से नहीं, परन्तु उसके कैद से, दरबार (अदालत) मसीहियत की ओर आकर्षित हुआ। यह एक कैदी के रूप में था जो उसने बहुत-सी आत्माओं के बंधनों को तोड़ डाला जो पाप की गुलामी में जकड़े हुए थे। और न ही यह सब कुछ। उसने ऐलान किया: 'और प्रभु में जो भाई हैं, उनमें से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, हियाव बांध कर परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी साहस करते हैं।' *फिलि० 1:14"- एलेन जी० ह्वाईट, द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स्, पेज 464*

आपके जीवन में आपने कितनी बार अनापेक्षित झटके महसूस किये हैं जिसने अन्त में अच्छाई का निर्माण किया है? (देखें फिलि० 1:12) आप उन अनुभवों से चीजों के लिये जहाँ पर कोई अच्छाई जागी हुई नहीं लगती परमेश्वर पर भरोसा करने के लिये कैसे विश्वास हासिल कर सकते हैं और करना चाहिए?

बुधवार **अक्टूबर 4**

रोम में "संतगण"

रोम में कलीसिया के लिये पौलुस का अभिवादन यहाँ पर है: "उन सबके नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाएगये हैं: हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।" (रोमि० 1:7)

इन वचनों से हम सत्य के धर्मविज्ञान के एवं विश्वास के कौन-से सिद्धान्तों को ले सकते हैं?

परमेश्वर के प्यारे । जब यह सत्य है कि परमेश्वर इस जगत् से प्रेम करता है, खास अर्थ में परमेश्वर उनसे प्रेम करता है जिन्होंने उसे चुना है, जिन्होंने उसके प्रेम का प्रत्युत्तर दिया है। यदि हम इसे मानव नजरिये से देखते हैं तो हम विशेष रूप से उन्हें प्रेम करते हैं जो हमें प्रेम करते हैं; उनके साथ स्नेह का परस्पर आदान-प्रदान होता है। प्रेम प्रतिक्रिया (जवाब) की मांग करता है। जब प्रतिक्रिया नहीं आ रही है, प्रेम अपनी संपूर्ण अभिव्यक्ति में सीमित हो जाता है।

संत पुकारे गये / कुछेक अनुवादों में वाक्यांश *"होना"* तिरछे अक्षरों में है, जिसका अर्थ होता है कि अनुवादकों ने शब्दों की पूर्ति की है। परन्तु ये दो शब्द अर्थ को अखण्ड रखते हुए छुट सकते हैं। जब ये हटाये जाते हैं हम "संत पुकारे गये" प्रकटीकरण को पाते हैं; यह है, "निर्देशित संत गण "

संत ग्रीक शब्द 'हगिओई' (hagioi) का अनुवादन है, जिसका शाब्दिक अर्थ "पवित्र लोग" होता है। पवित्र का अर्थ है "समर्पित।" संत वह होता है जो परमेश्वर द्वारा "अलग" किया हुआ होता है। उसे अभी भी पवित्रीकरण हेतु लम्बी दूरी जाना हो सकता है, परन्तु तथ्य यह है कि इस व्यक्ति ने मसीह को प्रभु के रूप में चुना है जो इसे संत के रूप में निर्दिष्ट करता है, यह समय-सीमा के बाइबलीय अर्थ में है।

पौलुस कहता है कि वे "संत होने के लिये बुलाये गये।" इसका तात्पर्य यह है कि कुछ लोग बुलाये नहीं गये हैं? पौलुस के तात्पर्य को समझने में *इफि० 1:4, इब्रा० 2: 9, और 2पत० 3:9* हमें कैसे मदद करता है?

सुसमाचार का महानतम विषय यह है कि मसीह की मृत्यु विश्वव्यापी थी; यह समस्त मानव जाति के लिये था। उसमें बचाये जाने के लिये सब बुलाये गये हैं, "संत होने के लिये बुलाया जाना" जगत् की नींव से भी पहले था। परमेश्वर की वास्तविक इच्छा सारे मानवता के लिये यीशु में उद्धार पाना था। नरक का अंतिम आग मात्र शैतान और उसके दूतों के निमित्त था (मत्ती 25:41)। कुछ लोग स्वयं लाभ नहीं ले पाते, उसका जो दान दिया गया था, उस उपहार से कुछ अधिक नहीं ले पाते सिवाय उसके जो बीच बाजार में भूख हड़ताल करता और वहाँ पायी जाने वाली प्रचुरता को ले जाता है।

जगत् की नींव से पहले ही परमेश्वर ने आपको उसमें उद्धार पाने के लिये बुलाया । आपको क्यों किसी चीज को उस बुलाहट से आपके ध्यान को हटाने के लिये अनुमति नहीं देना चाहिए, बिलकुल किसी चीज को नहीं?

बृहस्पतिवार **अक्टूबर 5**

रोम में विश्वासीगण

"पहिले मैं तुम सब के लिये यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत् में हो रही है" (रोमि० 1:8)

रोम में मंडली की स्थापना कैसे हुई इसकी जानकारी नहीं है। पतरस या पौलुस के द्वारा कलीसिया की स्थापना की प्रथा बिना ऐतिहासिक नींव के है। संभवत: ले सदस्यों ने इसकी स्थापना की,यरूशलेम में पेन्तिकोस्ट के दिन मनपरिवर्त्तन करने वालों में से (*प्रेरित 2*) जिन्होंने रोम का भ्रमण किया था स्थानांतरित हुए अथवा शायद बाद के दिनों में मन-परिवर्तित लोगों ने रोम की ओर अग्रसरित होते हुए अपने विश्वास की गवाही उस विश्व राजधानी में दी।

यह आश्चर्यजनक है कि पेन्तिकोस्ट से कुछ ही दशकों बाद एक मंडली जिसने स्पष्ट रूप से कोई प्रेरितरीय मुलाकात प्राप्त नहीं किया इतनी विस्तृत रूप से जानी जाने लगी। "विपक्ष के बावजूद मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बीस वर्षों बाद तक रोम की विश्वस्त कलीसिया जीवित रही। यह कलीसिया मजबूत और उत्साही थी, और प्रभु ने इसके लिये कार्य किया।"– *एलेन जी० ह्वाईट कॉमेंटस, द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेंटरी, वॉल्यूम 6, पेज 1067 "विश्वास"* यहाँ पर संभवता विश्वसनीयता (निष्ठा) के व्यापक अर्थ को शामिल करता है; यह है मसीह में प्राप्त जीवन के नये रास्ते के प्रति विश्वसनीयता ।

पढ़ें रोमियों 15:14 पौलुस रोम में कलीसिया का वर्णन किस प्रकार करता है?

पौलुस रोमी मसीहियों के अनुभवों को ध्यान देने योग्य तीन चीजों को सुयोग्य रूप से चुनता है:

"अच्छाई की भरपूरी" क्या लोग इसे कहेंगे कि यह हमारा स्वयं का अनुभव है? जैसे वे हमसे जुड़ते हैं, क्या यह हममें अच्छाई की भरपूरी है जो उनके ध्यान को आकर्षित करती है?

"सभी ज्ञान से भरपूरी।" बाइबल दुहराव के साथ जानकारी, सूचना एवं ज्ञान की महत्ता पर जोर देती है। मसीही उत्साहित किये जाते हैं कि बाइबल अध्ययन करें और इसकी शिक्षाओं से सुसज्जित हों। "शब्द, 'मैं एक नया हृदय भी तुझे-दूंगा,' इसका अर्थ, 'मैं तुझे नया मन दूंगा।' हृदय का बदलाव हमेशा सत्य की समझ और मसीही कर्त्तव्य के प्रति दृढ़ विश्वास के साथ चलता है।"– *एलेन जी० ह्वाईट, माय लाईफ टुडे, पेज 24*

"एक दूसरे को सलाह देने की योग्यता।" आत्मिक रूप से कोई समृद्धि प्राप्त नहीं कर सकता यदि वह अपने सह-विश्वासियों से अलग हो जाता है। हमें दूसरों को उत्साहित करने की सामर्थ रखनी चाहिए और साथ ही साथ दूसरों से उत्साहित होना चाहिए।

आपकी स्थानीय कलीसिया का क्या हाल है? इसकी कीर्ति किस प्रकार की है? अथवा, इससे बढ़कर क्या यह अपने तरह का बिलकुल एक है? आपकी स्थानीय कलीसिया के विषय आपका जवाब आपको क्या कहता है। इससे महत्त्वपूर्ण, यदि जरूरत हो तो, स्थिति में सुधार के लिये आप कैसे मदद कर सकते हैं?

शुक्रवार **अक्टूबर 6**

अतिरिक्त अध्ययन:

एलेन जी० ह्वाईट की किताब पढ़ें, "द मिस्ट्रीज ऑफ द बाइबल," पे० 706, इन टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 5; "सल्वेशन टू द ज्यूस," पेज 372-374, इन द एक्टस ऑफ द अपोसल्स। इसे भी पढ़ें एस०डी०ए० बाइबल डिक्शनरी, पेज 922; एवं द एस०डी०ए० बाइबल कॉमेन्टरी, वॉल्यूम 6, पेज 467,468

"मानव जाति का उद्धार ईश्वरीय उत्तर चिंतन या तात्कालिक उपाय का परिणाम नहीं है, जो पाप की उत्पत्ति के बाद घटनाओं के अनापेक्षित घुमाव के कारण जरूरी पड़ा

हो। बल्कि इस पृथ्वी की नींव के पूर्व मनुष्य के उद्धार के लिये ईश्वरीय योजना से जारी करता है, और मनुष्य के लिये अनंत प्रेम को परमेश्वर में स्थिर करता है (1कुरि० 2:7, इफि० 1:3,14; 2 थिस्लु० 2:13-14; यिर्म० 31:3)।

"यह योजना अनंत अतीत, ऐतिहासिक वर्त्तमान एवं अनंत भविष्य को सम्मिलित करती है। यह ऐसी वास्तविकताओं एवं आशीषों को शामिल करती है जैसे परमेश्वर के पवित्र लोग होने के लिये एवं मसीह की समानता प्राप्त करना, उद्धार एवं क्षमा, मसीह में सभी चीजों की एकता, पवित्रात्मा के द्वारा छाप होना, अनंत उत्तराधिकार की प्राप्ति एवं महिमागान (इफि० 1: 3-14)।

योजना का केंद्र यीशु का दु:ख एवं मृत्यु है, जो न तो इतिहास का संयोग है न ही मनुष्य मात्र के निर्णय की उपज है, परन्तु परमेश्वर की विमोचक प्रयोजन में स्थिर थी (प्रेरित 4: 27-28)। 'यीशु वाकई जगत् की नींव से बलि किया हुआ मेमना था' (प्रका० 13: 8)।*"– द हैण्ड बुक ऑफ सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट थेयोलोजी, पेज 275,276*

विचार-विमर्श के लिए प्रश्न

- कक्षा में प्रोटेस्टेंट सुधार के अर्थ पर विचार करें। इस प्रश्न पर खास रूप से विचार करें: इसके बिना हमारा जगत् आज कितना भिन्न होता?
- इस विचार पर चिंतन करें कि हम जगत् की नींव से पहले ही उद्धार पाने के लिये बुलाये गये (देखें तितुस 1:1,2; 2 तीमु० 1:8-9)। हम इसे क्यों इतना उत्साहवर्धक पाते हैं? समस्त मानव के लिये परमेश्वर के प्रेम के विषय यह हमें क्या बतलाता है? तब यह क्यों इतना दु:खद होता है जब लोग दया पूर्वक उन्हें जो प्रदान किया जाता है उससे मुँह मोड़ लेते हैं?
- बृहस्पतिवार के पाठ के अंतिम प्रश्न पर चिंतन करें। अगर जरूरत हो तो, आपकी कक्षा (सब्त स्कूल क्लास) आपकी कलीसिया की प्रसिद्धि में सुधार के लिये कैसे मदद कर सकती है?